विश्व शांति

जिस तरह सूर्य प्रकाश देता है, संवेदना करुणा को जन्म देती है, पुष्प सदैव महकता रहता है, उसी तरह आने वाला हमारा हर पल निर्भयता : संगठन : आनंद के साथ महकता रहे।

अपने दिल में जो है उसे कहने का साहस और दूसरों के दिल में जो है उसे समझने की कला अगर है तो रिश्ते कभी टूटेंगे नहीं।

पैर में से कॉटा निकल जाए तो चलने में मज़ा आ जाता है, और मन में से 'अहंकार' निकल जाए तो जीवन जीने में मज़ा आ जाता है। चलने वाले पैरों में कितना फर्क है, एक आगे है तो एक पीछे, पर ना तो आगे वाले को "अभिमान" है और ना पीछे वाले को "अपमान" क्योंकि उन्हें पता होता है कि पल भर में यह बदलने वाला है, इसी को ज़िंदगी कहते हैं।

जब तक वृक्ष का संबंध अपनी जड़ से बना रहता है, वृक्ष हरा बना रहता है। जड़ से काट दिया जाए तो दो-चार दिन में ही सूख जाता है। सब लोग अपने मूल को भूल कर अपनी वाहवाही लूटने में लगे हैं। पेड़ के सूख जाने की किसी को चिंता नहीं।

हमारी अपनी आध्यात्मिक उन्नति तथा परंपरा का विकास, एक दूसरे से जुड़े हैं। परंपरा के विकास की भावना त्याग, तपस्या एवं उदारता की वृद्धि का कारण है। जिस प्रकार कमज़ोर नींव पर ऊंचा मकान खड़ा नहीं किया जा सकता, ठीक इसी प्रकार यदि विचारों में उदासीनता, नैराश्य अथवा कमज़ोरी हो तो जीवन की गति कभी भी उच्चता की ओर नहीं हो सकती।

निराशा का अर्थ ही लड़ने से पहले हार स्वीकार कर लेना है और एक बात याद रख लेना - निराश जीवन में कभी भी हास (प्रसन्नता) का प्रवेश नहीं हो सकता और जिस जीवन में हास ही नहीं उसका विकास कैसे संभव हो सकता है?

जीवन रूपी महल में उदासीनता और नैराश्य ऐसी दो कच्ची ईंटें हैं जो कभी भी इसे ढहाने अथवा तबाह करने के लिए पर्याप्त है।

अतः आत्मबल रूपी ईंट जितनी मज़बूत होगी जीवन रूपी महल को भी उतनी ही भव्यता व उच्चता प्रदान की जा सकेगी। आदमी की सोच और नसीहत समय-समय पर बदलती रहती है। चाय में मक्खी गिर जाए तो चाय फेंक देते हैं। और देसी घी में मक्खी गिर जाए तो मक्खी को फेंक देते हैं।

जब लोग किसी को पसंद करते हैं, तो उसकी बुराइयां भूल जाते हैं और जब किसी से नफरत करते हैं, तो उसकी अच्छाइयां भूल जाते हैं।

एक व्यक्ति ने महात्मा जी से पूछा - उत्सव मनाने का बेहतरीन दिन कौन सा है ? महात्मा जी ने प्यार से कहा- मौत से एक दिन पहले।

व्यक्ति : "मौत का तो कोई वक्त नहीं !" महात्मा जी ने मुस्कुराते हुए कहा तो जिंदगी का हर दिन आखरी समझो और जीने का आनंद लो।

इन्सान मकान बदलता है, वस्त्र बदलता है, सम्बंध बदलता है फिर भी दुखी रहता है क्योंकि वह अपना स्वभाव नहीं बदलता।

जिंदगी छोटी नहीं होती है, लोग जीना ही देरी से शुरू करते हैं। जब तक रास्ते समझ में आते हैं तब तक लौटने का वक़्त हो जाता है।

हमारा व्यवहार गणित के "शून्य" की तरह होना चाहिए जो स्वयं कोई कीमत नहीं रखता लेकिन दूसरों के साथ जुड़ने पर, उसकी कीमत बढ़ा देता है।

सुंदरता और सरलता की तलाश चाहे हम सारी दुनियाँ घूम के करलें, लेकिन अगर वह हमारे अंदर नहीं तो फिर सारी दुनिया में कहीं नहीं। अपने भविष्य को पूरी शक्ति से अपने भीतर खींचे, अपने वर्तमान को अपनी क्षमता अनुसार रोककर रखें, अपने भूतकाल को पूरी ताकत से बाहर निकाल दें यही है सर्वश्रेष्ठ है जीवन का योग।

भगवान कहते हैं: "तलाश ना कर मुझे ज़मीन-ओ-आसमान की गर्दिशों में, अगर तेरे दिल में नहीं हूं तो कहीं नहीं हूं मैं।"

ॐ आनंद ॐ